Rashtriya Sahara
23-9-2022

वन अनुसंधान संस्थान में प्लांट पैथोलॉजी व एंटोमोलॉजी पर आयोजित किया गया वेबीनार

बीमारियों में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग की भूमिका पर जोर

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान के वन संरक्षण प्रभाग द्वारा बृहस्पतिवार को 'प्लांट पैथोलॉजी व एंटोमोलॉजी में आणविक हस्तक्षेप' विषय पर वेबीनार आयोजित किया गया। इसमें 100 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑनलाइन व ऑफलाइन प्रतिभाग किया।

संस्थान की निदेशक डा.रेणु सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि वेबीनार का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने वन पारिस्थितिकी तंत्र में पेड़ो में कीट और बीमारियों के प्रबंधन में डीएनए फिंगर प्रिंटिंग के भूमिका की आवश्यकता पर जोर दिया।

वन संरक्षण प्रभाग के प्रमुख डा. अमित पांडे ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने पेड़ों के वायरल रोगों के प्रबंधन मे आने वाली चुनौतियों के बारे में जानकारी दी। वहीं पहले तकनीक सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. विनय कालिया ने एंटोमोपैथोजेनिक बैक्टीरिया आधारित जैव कीटनाशकों में आणविक हस्तक्षेप की प्रस्तुति। उन्होंने फसलों और वन वृक्षों में कीटों की समस्या, उनसे निपटने के लिए उपलब्ध विकल्प, सिंथेटिक

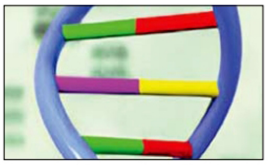

कीटनाशकों की विफलता और कीट नियंत्रण में एंटोमोपैथोजेनिक बैक्टीरिया के आइसोलेट्स की क्षमता के बारे में बताया।

सहायक प्रोफेसर डा. एम गुरिवी रेड्डी ने प्रतिभागियों को पादप वायरल रोगों के प्रबंधन के लिए सीआरएसआईपीआर के अनुप्रयोग के बारे में बताया। इस संदर्भ में उन्होंने केस स्टडीज भी प्रस्तुत की। डा. श्रुति गोदारा ने पौधों में वायरल रोगों के निदान के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न आणविक तकनीक के उपयोग, गुण और दोषों पर विस्तार से प्रकाश डाला। आयोजन सचिव जीएस उमा ने कीट प्रबंधन के लिए आरएनएआई के अनुप्रयोग के बारे में जानकारी दी। डा. रंजीत सिंह, डा.एपी सिंह, डा. विपिन प्रकाश, डा.केपी सिंह, डा.अरविंद कुमार, डा.शैलेश पांडे, रंजना जुंवाठा आदि भी इस दौरान मौजूद थे।

मानकों के अनुसार पारिश्रमिक देने की मांग

देहरादून(एसएनबी)। उत्तराखंड जल संस्थान कर्मचारी संगठन और संयुक्त मोर्चा ने मुख्य महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंपकर श्रमिकों को मानकों के अनुसार पारिश्रमिक देने की मांग की है।उत्तराखंड जल संस्थान कर्मचारी संगठन के प्रदेश महामंत्री व संयुक्त मोर्चा के मुख्य संयोजक रमेश बिंजोला के नेतृत्व में मुख्य महाप्रबंधक को ज्ञापन भेजा। ज्ञापन मे मांग की गई कि उत्तराखंड शासन श्रम विभाग द्वारा अधिसूचना में आठ मार्च 2019 से न्यूनतम मजदूरी की दरें एक अप्रैल 2019 से प्रभावी है, जिसके क्रम में

उत्तराखंड जल संस्थान में ठेकेदार के माध्यम से लगाए गए कार्मिकों को श्रम विभाग के मानकों के अनुसार पारिश्रमिक नहीं दिया जा रहा है। इसके कारण संबंधित श्रमिकों को आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, जबकि मुख्यालय द्वारा भी इस शासन आदेश के क्रम में 27 मई 2019 द्वारा अनुपालन को स्पष्ट आदेश पारित किए गए है। आदेशों की अनदेखी की जा रही है। कर्मचारी संगठन द्वारा मुख्य महाप्रबंधक से इन आदेशों के अनुपालन में ठेकेदारों के माध्यम से कार्यरत कार्मिकों को पारिश्रमिक दिलाए जाने का पुनः अनुरोध किया गया है। इस अवसर पर श्याम सिंह नेगी, शिशुपाल सिंह रावत, संदीप मल्होत्रा, लाल सिंह रौतेला, सतीश पार्षा,आशीष तिवारी, धूम सिंह सोलंकी व संजय कुमार आदि उपस्थित थे।

देहरादून में खोला पहला आउटलेट

प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर तरुण टहलियानी व आदित्य बिरला फैशन एंड रीटेल द्वारा देहरादून में अपना पहला स्टोर खोला गया। राजपुर रोड पर इस आउटलेट का उद्घाटन बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव अभिनव कुमार ने किया। इस दौरान क्रिएटिव डायरेक्टर तरुण टहलियानी व तस्वा के सीईओ संदीप पाल भी मौजूद थे। संचालकों ने बताया कि स्टोर में परिधानों के विभिन्न कलेक्शन मौजूद हैं जो कि अलग-अलग डिजाइन में तैयार किए गए हैं।

Shah Times
20-9-2022

तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण और प्रबंधन पर ट्रेनिंग कोर्स का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग, एफआरआई की ओर से भारतीय तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए 'तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण और प्रबंधन' पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया है।

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य तटीय जैव विविधता और इसके प्रबंधन से संबंधित मुद्दों की समझ विकसित करना है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी और नई दिल्ली के 12 अधिकारी भाग ले रहे हैं। निदेशक, एफआरआई, डॉ रेणु सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में तटीय पारिस्थितिकी तंत्र और इसके प्रबंधन के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. सिंह ने उल्लेख किया कि कई आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों के कारण दुनिया भर के तटीय क्षेत्र जबरदस्त दबाव में हैं। ये दबाव तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता के लिए खतरा हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि, समुद्र

भारतीय वन अनुसंधान की ओर से तट रक्षक बल के अफसरों के लिए किया जा रहा एक सप्ताह का आयोजन

के स्तर में वृद्धि, समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण जैसी घटनाएं तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को भी प्रभावित कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से समुद्र के स्तर में वृद्धि तटीय जैव विविधता, समुदायों और कृषि उत्पादन पर महत्वपूर्ण होने का अनुमान है। इसलिए इसका संरक्षण और प्रबंधन समय की मांग है। अंत में सफल आयोजन की कामना की। प्रशिक्षण की शुरुआत डॉ. वी.पी. पंवार, प्रमुख, वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग के स्वागत भाषण से हुई। पाठ्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सभी प्रभागाध्यक्ष, आईएफएस अधिकारी, वैज्ञानिक, डीन एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी, रजिस्ट्रार एफआरआई, संस्थान के तकनीकी कर्मचारी शामिल हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. अभिषेक के वर्मा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सत्र का समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम एक सप्ताह तक चलेगा जिसमें प्रख्यात संसाधन व्यक्ति तटीय जैव विविधता और प्रबंधन पर अपने अनुभव और ज्ञान साझा करेंगे। अधिकारियों को जैव विविधता के संरक्षण और प्रबंधन से अवगत कराने के लिए मसूरी में मसूरी वन्यजीव अभयारण्य और हरिद्वार में झिलमिल झील में दो फील्ड टूर की व्यवस्था की जाएगी।

Rashtriya Sahara
20-9-2022

तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान के वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग द्वारा भारतीय तटरक्षक बल के अधिकारियों के लिए तटीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण व प्रबंधन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। सप्ताहभर तक चलने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन सोमवार को संस्थान की निदेशक डा.रेणु सिंह ने किया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य तटीय जैव विविधता और इसके प्रबंधन से संबंधित मुद्दों की समझ विकसित करना है। गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी व दिल्ली के 12 अधिकारी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग ले रहे हैं। संस्थान की निदेशक डा.रेणु ने तटीय पारिस्थितिकी तंत्र और इसके प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। कहा कि कई आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों के कारण दुनियाभर के तटीय क्षेत्र जबरदस्त दबाव में हैं। यह दबाव तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिक स्थिरता के लिए खतरा हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि, समुद्र के स्तर में वृद्धि, समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण जैसी घटनाएं तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को भी प्रभावित कर कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से समुद्र के स्तर में वृद्धि तटीय जैव विविधता, समुदायों व कृषि उत्पादन पर महत्वपूर्ण होने का अनुमान है। डा.वीपी पंवार ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।